# 'पढ़ना' भी सीखना होता है

– विनय प्रभा पाठक

**किताबों से बातें और किताबों की बातों का जो आनन्द है वो बिना किताबों को पढ़े नहीं मिल पाता, उस आनन्द की अनुभूति करने हेतु हमें अच्छी किताबें पढ़नी ही होंगी।**

जब विद्यालय बंद हुए तो मैं अपने अध्यापन कार्य से दूर हो गयी, अपने आसपास के वातावरण जहां केवल कोरोना महामारी का ही भय व्याप्त दिखा जिससे मैं भी अछूती न रही। इस बीच अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के साथियों ने वाट्सएप ग्रुप बनाने की बात की, जिसमें कई सारे अध्यापकों को जोड़ा था और इस ग्रुप में नित नये लेख, कहानियां, कविताएं आदि भेजते थे। बस, अब तो मैं कोरोना को भूल गयी, अब दौर शुरू हो गया पढ़ने का, सोचने का, समझने का, यह सब मुझे अच्छा लगने लगा। अच्छा इसलिए भी क्योंकि इतने अच्छे लेख मैं चाहकर भी स्वयं के लिए ढूंढ नहीं सकती थी।

मैं अपनी बात करूं तो शिक्षक होने के तौर पर सृजन से जुड़ने के उपरान्त मुझे लगता है जब हम पढ़ रहे होते हैं तो वह केवल पढ़ना ही नहीं हो रहा होता है, हम कहीं न कहीं स्वयं का विश्लेषण भी कर रहे होते हैं, जो भी हम पढ़ रहे होते हैं, वो चाहे कहानी हो या कुछ और उसके संदर्भों/पात्रों से जुड़ रहे होते हैं इसके अलावा हम पढ़ते समय केवल पढ़ ही नहीं रहे होते बल्कि लिखे हुए के पैटर्न को पकड़ कर पैटर्न/तरीके को पकड़ रहे होते हैं ताकि हम भी कुछ वैसा ही लिख पायें, और पढ़ते–पढ़ते हम लेखन की ओर भी अग्रसर होने लगते हैं।

एक उदाहरण बताना चाहूंगी जब मुझे लिखने का मौका मिला तो उसे लिखने से पहले मैंने न जाने कितने लेख पढ़े। मन रुका तो किशोर पंवार जी को लेख– 'एक शाम पंछियों के नाम' तथा स्निग्धा दास जी के– 'एक शिक्षक की याद पर'। अब मन में फिर उधेड़बुन किस पर लिखूं, अंत में चूंकि मैं प्रकृति प्रेमी हूं, तो किशोर पंवार जी के लेख जो उन्होंने पंछियों पर लिखा था मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने भी एक कहानी लिखी 'एक मैना जो मुझको सिखा गयी'।

एक बात और जो मुझे लगी कि जब हम पढ़ रहे होते हैं तो

फोटोः अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन

उन लेखों के पात्रों को समाज से संदर्भों से जोड़ने के साथ–साथ अपने अंदर जो बातचीत करने लगते हैं तब हम विश्लेषण करने, तर्क करने के साथ–साथ क्या, क्यों और कैसे? जैसे प्रश्नों पर सोचने विचारने लगते है, एक रूढ़िवादी सोच कही पीछे रह जाती है और वैज्ञानिक सोच प्रस्फुटित होने लगती है।

मैं अपनी बात कहूं तो मैं जैसे ही पढ़ने–लिखने की दुनिया में प्रवेश करती हूं तब मुझ में दुनिया जहां मेरी दिनचर्या है, परिवेश है, वो साधारण सा लगने लगता है और मैं पढ़ने–लिखने की विशेष दुनिया में प्रवेश करने लगती हूं। मन और अधिक कविताओं, कहानियों में खो जाना चाहता है, पढ़ना चाहता है, नयी–नयी किताबों के पन्ने और उन पन्नों की हर पंक्ति से शब्दों में स्वंय को टटोलना चाहता है।

यह सही बात है किताबों से बातें और किताबों की बातों का जो आनन्द है वो बिना किताबों को पढ़े नहीं मिल

पाता, उस आनन्द की अनुभूति करने हेतु हमें अच्छी किताबें पढ़नी ही होगी। किताबों को पढ़ने के उपरान्त हमारे चीजों को देखने, सोचने, समझने के नजरिये में एक बड़ा परिवर्तन होता है।

सृजन समूह में पढ़ने के दौरान हमने जो भी पर्चे पढ़े उनकी बात करूं तो मुझे कई सारे पर्चो ने प्रभावित किया जिनमें निमरत जी का–''क्या शिक्षक एक पेशेवर है'' जिसमें पेशेवर शब्द को समझने में मुझे मदद मिली, इसके अलावा शिवरतन थानवी जी का 'शिक्षक पढ़ेगा नहीं तो बढ़ेगा कैसे'' लेख ने एक शिक्षक के रूप में मेरी अंतरात्मा को जगा दिया। मेरे अंदर के शिक्षक को स्वयं का विश्लेषण करने का मौका दिया, इसी तरह मो. उमर जी का, 'वे स्कूल क्यों आते हैं' ने कई सारे प्रश्न जो कई विद्यालयों में अध्यापकों द्वारा उठाये जाते हैं पर सोचने को विवश किया। इसी तरह एक और पर्चा था सुशील जोशी जी का– 'परीक्षा न हो तो तुम सीखोगे नहीं' जिसने हमारे मन में बच्चों के सीखने को लेकर चल रहे प्रश्नों पर सोचने को तो मौका दिया ही कई प्रश्नों पर विराम भी लगाया।

कक्षा–शिक्षण के अनुभव वाले पर्चे जैसे दिलीप चुघ का 'क्या, ईंट भी पानी पीती है' जैसे पर्चे ने हमें भी अपनी कक्षा के अनुभव लिखने के लिए प्रेरित किया और अगर कुछ और लेखों की बात करूं तो 'पुराने दिनों का डाकिया' अच्छा लगा, एक शिक्षक के तौर पर देखूं तो ये एक कमजोर तबके की कहानी को दर्शाता है। आज से 150 वर्ष पूर्व पहले पहुंचना उसे अनुभव करना अद्भुत था जो आज भी डाकिये की कार्य करने की शैली व्यवहार परिश्रमशीलता में अधिक बदलाव न आना भावुक कर देता है। इससे बच्चे भी जुड़ाव महसूस करेंगे, इसके अलावा, 'रमजान' 'नादान दोस्त' 'दुवा' 'खूबसूरती और सच' 'पहाड़ जिसे चिड़िया से प्यार हुआ' 'मौजों से दावत' कहानियां ने कहीं न कहीं हमारे अंदर की भावनाओं संवेदनाओं को जगाने का कार्य किया तो वहीं धर्मवीर भारती जी का लेख– 'मेरा निजी पुस्तकालय' ने तो हम ग्रुप के सभी शिक्षक साथियों को अपने पुस्तकालय बनाने तथा अच्छी किताबें पढ़ने हेतु प्रेरित करने के साथ–साथ आत्ममंथन का भी अवसर दिया।

*(लेखिका राजकीय कन्या उच्च प्राथमिक विद्यालय ट्रांजिट कैम्प, रुद्रपुर, ऊधमसिंह नगर में सहायक अध्यापिका हैं)*

# लड़ाई

**– सुनील कुमार रतूड़ी**

**दो की लड़ाई**
**बड़े प्यार से रहते कुत्ता–बिल्ली**
**आपस में जैसे दो भाई।**
**घर की करते दिन–रात चौकसी,**
**कभी न कोई आफत आने पाई।**
**डर से घर में घुस न पाता चूहा,**
**बार–बार उसने जुगत लगाई।**
**न जाने किस बात पे एक दिन**
**कुत्ते–बिल्ली में हुई लड़ाई।**
**बात न करते एक दूजे से,**
**दोनों ने अपनी शक्ल छुपाई।**
**दिन भर जो गली में मारा फिरता,**
**उस चूहे की तो बस बन आई।**
**घुस कर घर में करता धमाचौकड़ी,**
**कहीं कुतरे मोज़ा, कहीं फाड़े रजाई।**
**तूफान मचा डाला पूरे घर में,**
**खा गया सारी दूध मलाई।**
**मां दंग रह गई देखकर,**
**घर में आफत ये कहां से आई।**

*(लेखक राजकीय प्राथमिक विद्यालय, डाडी, भगवानपुर, हरिद्वार में अध्यापक के पद पर हैं)*